International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

लोकजागरण के उद्घोषक कबीरदास

*Sunita Kumari
Email: sunitakumarirohtak@gmail.com
Research Scholar
Department of Education
M.D.U Rohtak

संत शिरोमणि सदगुरु कबीर साहब का आविर्भाव विक्रम संवत १४५६ को ज्येष्ठ पूर्णिमा दिन सोमवार को काशी लहरतारा सरोवर में हुआ। लहरतारा में उनका प्रथम दर्शन श्रीमती नीमा देवी को हुआ था। इसी दिन मियां नीरू अपनी धर्मपत्नी नीमाजी का द्विरागमन करके मड़वाडीह से लेकर आ रहे थे। गर्मी का दिन, ज्येष्ठ की तपतपाती दुपहरी थी। नीमाजी प्यास से आकुल व्याकुल हो उठी। अतः शुभ्रस्वच्छ जल से परिपूरित लहरतारा सरोवर के निकट पालकी उतार दी गई। नीमा जी प्रकृति के अंक के सुभोभित लहरतारा की ओर बढ़ चली। लहरतारा अलौकिक कमलपुष्पों की बहुलता के लिए सदा से प्रसिद्ध रहा है। ज्यों ही नीमा जी ने लहरतारा की ओर दृष्टि निक्षेप किया कि उनकी दृष्टि एक वृहत् कमलपुष्प पर जा पड़ी, जिस पर एक सुंदर, सुकोमल मनोहारी नवजात शिशु अपने हस्त पाद से अठखेलियां करता हुआ आनंद से किलकारियां भर रहा था। उसके मुखमंडल पर एक दिव्य आभा फैली हुई थी। उसकी मनोहारी गैवी छवि को देख तृषाकुलता को भूल बरबस एकटक उसकी ओर निहारती रह गई। वह उस बालक को अपने हृदय से लगा लेने को व्याकुल हो रही थी। अंततः उन्होंने लोक लाज के भय को तोड़कर नुरानी बच्चे को अपनी गोद में उठाकर भावविभोर होती हुई नीरूजी के पास आई और उस बालक को घर ले जाने का हठ करने लगी। नीरू जी ने लोग क्या कहेंगे, इस भय से पहले तो नाहिं की, पर नीमा जी के हठ और बालक के मनोहारी दिव्य आकर्षण में बंधा उनके चित्त ने उन्हें बालक को अपने घर ले जाने को मजबूर कर दिया। वही बालक आगे चलकर महाप्रसिद्ध संत कबीर कहलाए। बचपन से ही अलौकिक प्रभा छिटकती थी उनके जीवन में।अतः कबीर साधु संत और सूफी फकीर दोनों के सत्संग में बैठते। बाल्यावस्था से ही उनमें विलक्षण विवेकक्षमता थी। जहां भी कुरति और अंधमान्यता को देखते, वहीं कुठाराघात कर देते

थे और सत्य की राह बतलाते थे चाहे कोई हिन्दू हो या मुसलमान। जब उन्होंने देखा कि हिन्दूओं में जो तथाकथित उच्च वर्ण के ब्राह्मणवर्ण कहे जाते हैं, वे नेम टेम से व्रत उपवास तो करते हैं और दूसरे दिन मांसाहार से पारण करते हैं, अभक्ष्य भक्षण करते हैं तो उन्होंने फटकारते हुए कहा-

हिन्दू बरत एकादशी साधे दूध सिंघाड़ा सेती ।
अन्न को त्यागे मन को न हटकै पारण करै सगौती॥

दिनभर उपवास करके दूध सिंघाड़ा से तुम व्रत करते हो, अन्न की आसक्ति का तो त्याग करते हो, लेकिन मांस में मन अटका लेते हो तो भला यह तुम्हारा कैसा व्रत है इससे प्रभु कैसे खुश हो सकते हैं? मुसलमान रमजान में दिन भर उपवास रखकर रोजा करते और शाम को बकरी मुरगी मारकर उसका आहार बनाते तो उनको उन्होंने कहा-

दिन को रोजा रहत है, राति हनत हैं गाय ।
यहां खून वै वंदगी, क्यों कर खुशी खोदाय॥

अर्थात् तुम दिन को तो भूखे रहकर रोजा रखकर खुदा की बंदगी करते हो और रात्रि में हिंसा करके पाप बटोरते हो तो भला खुदा कैसे प्रसन्न हो सकता है? वे गलत परंपरा पर केवल कुठाराघात ही नहीं करते, बल्कि लोगों को कल्याणकारी सही मार्ग भी बतलाते। हिन्दू और मुसलमान दोनों को उन्होंने कहा-

हिन्दू तुरक की एक राह है, सतगुरु सोई लखाई ।
कहैं कबीर सुनो हो संतों, राम न कहहू खुदाई॥

अर्थात् हिन्दू और तुरक दोनों के लिए धर्म का एक ही मार्ग है और वह है दया का मार्ग, प्रेम और संवेदना का मार्ग सत्य और अहिंसा का मार्ग। अगर इस मार्ग को तुम अपना लेते हो तो फिर राम या खुदा जो भी कहते हो तुम्हारा कल्याण है, लेकिन यदि पाप को अपनाए रहो तो चाहे कितना भी जाप करो पुराण पंथ या व्रत उपवास रखो, तुम्हारा भला नहीं हो सकता। वे कहते-

जीव घात ना कीजिए बहुरी लेत वै कान ।
हत्या कबहुं न छुटि हैं कोटिन सुनो पुराण॥
जीव घात ना कीजिए, बहुरि लेत वै कान ।
तीरथ गए न बांचिहों कोटि हीरा देहु दान॥

उनकी सत्य बातों से जब पंडितों और मौलवियों को खलल पहुंचने लगा तो अपने बचाव के लिए वे कहने लगे तू तो निगुरा है। तुझे उपदेश देने का क्या अधिकार? अध्यात्म की चर्चा करना और सुनना निगुरों का काम नहीं।

पूर्णावतार होते हुए भी लोकशिक्षा हेतु सदगुरु कबीर ने गुरुदीक्षा का आदर्श दिखलाया। उस समय रामानंद जी अच्छे संत माने जाते थे, लेकिन वे जुलाजों से परदा किया करते। हिन्दू मुसलमान का भेद किया करते थे। अतः जुलाहे कुल में पालित होने के कारण उनको गुरुदीक्षा प्राप्ति में कठिनाई हो रही थी। अंततः कबीर ने एक युक्ति सोची।

रामानंद स्वामी नित्यप्रति ब्रह्मवेला में गंगास्नान के लिए जाया करते थे। कबीर पहले से ही पंचगंगा घाट की सीढ़ियों पर जाकर लेट गए। स्वामी जी जब गंगा में उतरने को आगे बढ़े तो सीढ़ी पर ही उनकी पादुका से कबीर टकरा गए और वे शिशुवत रोने लगे। स्वामी जी ने उन्हें उठाकर उनके मस्तक पर हाथ फेरा, पुचकारा और कहा, बेटा! राम राम कहो। राओ मत, ठीक हो जाओगे।

इसके बाद बालक कबीर घर आकर माला तिलक लगाकर वैष्णवी वेश धारणकर अपने को स्वामी रामानंदजी का शिष्य घोषित कर दिया।

नीमा जी ,कबीर की माता, जो मुस्लिम परिवार से आई हुई थी, कबीर के इस वेश को देख रोती कलपती शिकायत से भरी रामानंद जी के पास पहुंची। रामानंद स्वामी उदार और समाज चिंतक संत थे। उन्होंने कबीर को बुलवाया और पूछा, मैंने तुम्हें कब दीक्षा दिया?

कबीर ने कहा, महाराज! आप ही ने तो मुझे पंच गंगा घाट पर दर्शन देकर राम राम कहो कह कर राम नाम का महामंत्र दिया। आप अन्य शिष्यों को भी तो राममंत्र ही दिया करते हैं गुरुवर। स्वामी जी ने कबीर को गले लगा लिया और कहा, पुत्र! जिस तरह तुमने श्रीराम भक्ति अपनाई है, उस तरह किसी ने नहीं अपनाई। तुम जन्म जन्म के योगी हो और निश्चय आगे चलकर संत सम्राट बनोगे, यह मेरा अशीर्वाद है। स्वामी जी का आशीर्वाद पा कबीर गदगद् हो उठे। यह खबर सर्वत्र बिजली की तरह फैल गई। गुरुदीक्षा प्राप्ति के पश्चात कबीर समाज सुधार और आत्मकल्याण का उपदेश करने लगे। वे कहते-

हाड़ बड़ा हरि भजन करि द्रव्य बड़ा कछु देह ।
अकल बड़ी उपकार करि जीवन का फल येह॥

कबीर साहब ने रामभजन पर काफी जोर दिया। वे कहा करते-

राम नाम की लूट है, लूट सकै तो लूट ।
फिर पाछे पछताहुगे, जब प्राण जाहिंगे छूट॥
श्वास श्वास में नाम लो, मिथ्या श्वास न खोय ।
न जाने इस श्वास का, आवन होय न होय॥

वे मनुष्य शरीर की दुर्लभता और क्षणभंगुरता बतलाते हुए कहते-

मानुष जनम दुर्लभ है, देह न बारंबार ।
पक्का फल ज्यों गिर परा, बहुरि न लागे डार॥

लेकिन जहां वे सत्यज्ञान का उपदेश किया करते, वहीं सामाजिक कुरीतियों और धार्मिक पाखंडो को देख क्षुब्ध हो जाया करते थे। हिंसा, नफरत और भेदभाव को देख सबमें एक राम का नूर देखनेवाले कबीर की आत्मा कलप उठती थी। जब लोग अपने-अपने, अलग-अलग ईश्वर का नाम लेकर झगड़ पड़ते, हिन्दु कहते कि हमारे ईष्ट राम हैं और मुसलमानों के करीम। मुसलमान कहते हमारे पीर खुदा है और हिन्दुओं के ईश्वर, तो वे समझाते हुए कहते-

भाई रे दुई जगदीश कहां से आया?
कहु कौने भरमाया
अल्लह, राम, करीमा, केशव
हरि हजरत नाम धराया ।
गहना एक कनक ते गहना
यामे भाव न दूजा॥

इसी भांति हिन्दू मुस्लिम, ब्राह्मण मुल्ला, स्पृश्य-अस्पृश्य के नाम पर, समाज में वैमनस्य की आंधी फैल रही थी। आध्यात्मिक नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही थी। लोग रूढ़ियों और बाह्य आडबंरों में लिप्त हो रहे थे। भ्रष्टाचार, अनैतिकता, असहिष्णुता का नग्न तांडव हो रहा था तो कबीर साहब ने ब्राह्मण और शूद्र की थोथी नीति की परखच्चियां उड़ाते हुए कहा-

एकै तुचा हाड़ मल मूत्रा एक रिधुर एक गुदा ।
एक बूंद से सृष्टि रचि है, को ब्राह्मण को शूद्रा॥

ब्राह्मणों की श्रेष्ठता ओर मुसलमानों की मूढ़ मुसलमान नीति की बघिया उड़लते हुए कबीर ने समझाया-

जो तू ब्राह्मण ब्राह्मणी को जाया ।
और राह दे काहे न आया?
जो तू तुरक तुरकिनी को जाया ।
पेटहि काहे न सुनति राया?

उन्होंने हिन्दू मुसलमान दोनां की कुरीतियों और खामियों पर आक्षेप करते हुए दोनों को सन्मार्ग दिखाया, तभी तो उन्होंने स्वयं ही कहा है-

हिनदु तुरक के बीच में मेरा नाम कबीर ।
जीव मुक्तावन कारने अविगत धरा शरीर॥

उनके उपदेश से बुद्धिजीवियों में वैचारिक क्रांति फैलने लगी जिससे जो समाज के अगुआ माने जानेवाले पीड़ित मौलवी थे, जो स्वार्थ व सदगुरु कबीर सत्यनिष्ठ बनकर सत्य परमात्मा की प्राप्ति पर जोर देते थे। वे कथनी और रहनी गहनी की एकता पर बल देते थे। अंतःकरण की शुद्धता पवित्रता, प्रेम संवेदना, सत्य, अहिंसा और सात्विकता के पक्षपाती थे, कर्मकांड और बाह्य आडंबरों के नहीं। इसीलिए तो उन्होंने यहां तक कह दिया-

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय ।
ढाई आखर प्रेम का पढ़ै सो पंडित होय॥

और-

हृदया शुद्ध किया नहीं बौरे कहत सुनत दिन बीता।
तथा मुख किछु और दय किछु आना ।
सपनेहु काहु मोहि नहीं जाना॥

उन्होंने कहा दिया-

कहैं कबीर पद बुझै सोई ।
मुख हृदया जाके एकै होई॥

सदगुरु कबीर साहब के सत्यनिष्ठ साफ, सुलझे, अहिंसात्मक, दोष दुर्गुणों से रहित, कर्मकांडरहित सर्वहितकारी, सरल और कल्याणकारी, लोक परलोक, व्यवहार परमार्थ दोनों को मंगलमय बनानेवाले सहज मार्ग से प्रभावित होकर अधिक से अधिक जनता सदगुरु कबीर साहब के सत्य सिद्धांतों पर चलने लगी। देश भर में वैष्णवधर्म का बोलबाला होने लगा। फलतः धर्म के व्यवस्थावादी पंडित मुल्ला बौखला गए। हिंदू कहते कि कबीर जाति वर्ण, तीर्थ का विरोणी है और मुसलमान कहते कबीर मुसलमान

होकर भी ईस्लाम को नहीं मानता। अतः कबीर काफिर हैं। व्यवस्थावादियों ने बनारस में कबीर को दबाने का हर संभव प्रयास किया। परंतु कबीर तो जैसे राम संजीवन मूरी के ज्ञान और पान कर अजेय अडिग हो गए थे। दबे कुचले सताए हुए बहुसंख्यक जनता कबीर के पीछे कीर के धुनों को गाती हुई चल पड़ी थी। लोग जाति पांति, ऊँच नीच और हिन्दू मुसलमान के भेद से तंग आ गए थे और वे कीर के समतापोषक ज्ञान के दीवाने हो रहे थे। एक बहुत बड़ी जनसंख्या जिन्हें मंदिरों में जाने तक भी अधिकार नहीं था और जो हीनभावना से ग्रसित थी। उन्हें कबीर ने कहा-

दिल में खोज दिल ही में खोजो यहीं करीमा राम ।

और

मन मक्का दिल द्वारिका काया काशी जान।

दश द्वारे का देहरा तामें ज्योति पिछान॥

इन सरल और सर्वगम्य उपदेशों को सुनकर उफनती नदी की तरह लोग उनके पीछे चलने लगे थे। दोनों धर्म के अगुआ बने लोग तत्कालीन दिल्ली के बादशाह से सिकन्दर लोदी के पास जाकर शिकायत की। वे साथ में कबीर की मां नीमा को समस्या के समाधान केलिए बनारस लाए थे और उन्हें कबीर को बुलवाया था। कबीर बादशाहों के बादशाह राम के प्रेम में मस्त आ पहुंचे थे। सिकन्दर लोदी बहकावे में आकर कबीर साहब को सांकलों से जकड़कर बीच गंगा में फेकवा दिया, पर कबीर क सांकल अपने आप टूट गए और वे पानी के सतह पर ध्यानमग्न पाए गए। चोट खाए सांप की तरह क्रुद्ध हो सिकन्दर लोदी ने लकड़ी केढ़ेर मेंअग्नि धधका कर उसमें कबीर को डलवा दिया, पर अग्नि भी कबीर को न जला सकी उल्टे वे और अधिक तेजस्वी हो आग से प्रकट हुए। अंततः सिकन्दर लोदी ने पागल हाथी के सामने उन्हें डाल दिया, पर हाथी भी कबीर की वंदनाकर पीछे हट गया।

अंततः पराजित और लज्जित होकर अपने गुरु शेखतकी सहित सिकन्दर लोदी कबीर साहब के चरणों में गिर पड़े। अपने जीवन काल में ही सदगुरु कबीर साहब ने देश विदेश की कई बार यात्र की और जीवों को मुक्ति का सहज मार्ग बाकर चेताया। उन्होंने स्वयं कहा है-

देश विदेशे हौं फिरा गांव गांव की खोरि ।

सोइ हित बंधु मोहि मन भावे। जात कुमारग मारग लावे॥

उन्होंने अध्यात्म की गूढ़ गुत्थियों को सुलझाया तथा योग की लुप्तप्राय विधियों को पुनर्जीवित किया। वे छुआछूत, जाति पाति, ढोंग पाखंड, हिंसा बलि, कर्मकांड आडंबर, भेदभाव, बुतपरस्ती को नहीं मानते थे और मानव मानव की एकता, सामाजिक समरसता, निर्गुण, निराकारी, सर्वव्यापी प्रभु को घट घटवासी तथा धर्म और अध्यात्म के सरल सहज मार्ग का उन्होंने प्रचार प्रसार किया। हिन्दू मुसलमान सभी उनके शिष्य थे।

धर्म का प्रचार प्रसार करते लोगों को चेताते हुए इस प्रकार अपने जीवन के अंतिम काल में जब शरीर थक सा चुका तो व पुनः काशी वापस आए ही थे कि मगहर नरेश बिजली खां पठान काशी आ पहुंचा, सदगुरु का शिष्यत्व स्वीकार किया और मगहर के बारे में बता अपना दुखड़ा रोने लगा। मगहर की जनता वर्षों से सूखा और अकाल का प्रकोप झेल रही थी। उसने सदगुरु कबीर साहब से मगहर चलने की प्रार्थना और बार बार आग्रह करने लगा। उका दृढ़ विश्वास था कि कबीर साहब के मगहर जाने से वहां की धरती हरी भरी हो जाएगी। उस समय सदगुरु कबीर की अवस्था लगभग १२० वर्ष की हो चली थी। जब सदगुरु कबीर साहब के शिष्यों ने यह बात सुनी तो वे दुखी हो गए। उन्हें लग रहा था कि कबीर साहब के बिना वे अनाथ हो जाएंगे, काशी नगरी सूनी हो जाएगी। उनके अनुसार मुक्ति का संबं तो रामभजन रामविश्वास, आत्मज्ञान और आत्मशुद्धि से है न कि काशी और मगहर से।

अंततः अंतिम समय में उन्होंने मगहर की यात्रा की। उनके चरण पड़ने से मगहर का जलाभाव दूर हो गया और आज भी वहां की नदी आमी में सालोभर जल रहता है। वहां पर सदगुरु कबीर साहब ने शरीर त्याग करने का निर्णय लिया। एक कुटी में प्रवेश कर सदगुरु प्रभु आत्मध्यान में तल्लीन होकर रामसुमिरण करने लगे। कुटी के बाहर भी नाम संकीर्तन करते रहने का आदेश दिया। जब अंदर से राम की ध्वनि बंद हो गई तो पट खोलकर शव प्राप्ति की बारी थी। वीर देवसिंह बधेल के नेतृत्व में हिंदुओं ने कहा हम कबीर साहब के पावन शरीर को हिंदू रीति से संस्कार करेंगे क्यों वे हमारे गुरु हैं और बिजली खां के नेतृत्व में मुसलमान कहने लगे कि सदगुरु कबीर साहब हम सब के पीर हैं, इसलिए हम सब उनके पाक शरीर को इस्लाम के अनुरूप दफनाएंगे।इस बात को लेकर हिंदुओं और मुसलमानों में युद्ध की ठन गई। तभी आकाशवाणी हुई,

तुम खोलो परदा, है नहीं मुरदा ।
युद्ध मिथ्या तुम कर डारी॥
आकाशवाणी सुन जब परदा खोला गया तो केवल चादर, और पुष्प थे

अंततः हिंदुओं और मुसलमानों ने पुष्प और चादर को बांट लिया। हिंदुओं ने अपने हिस्से के फूलों का मगहर में समाधि का रूप दिया और मुसलमानों ने अपने हिस्से को दफनाकर मकबरा बनाकर फूलों के कुछ हिस्से को सुरतिगोपाल साहब ने वाराणसी कबीर चौरा में लाकर उस स्थान पर एक समाधि का निर्माण किया, जहां कबीर साहब की साधना स्थली और कर्म स्थली थी।

एक ज्योति पुरुष के रूप में सदगुरु कबीर अपने जीवन काल में देदीप्यमान रहे, आज भी हैं और आगे भी रहेंगे। समस्त मानवता का कल्याण उनकी वाणियों में निहित है। सदगुरु कबीर साहब का संपूर्ण जीवन दिव्य अलौकिक तारों से बिनी एक बेदाग चादर है, जिसमें अद्भुत अनूठी, अनुपम घटनाओं की अनंत सितारे जगमग जगमग करते हैं।

सन्दर्भ

1. ↑ [अ] [आ] [इ] Kabir Encyclopædia Britannica (2015)Accessed: July 27, 2015
2. ↑ [अ] [आ] Hugh Tinker (1990). South Asia: A Short History. University of Hawaii Press. **पृ.** 75–77. **आई.ऍस.बी.ऍन.** 978-0-8248-1287-4. **अभिगमन तिथि**: 12 July 2012.
3. **ऊपर जायें**↑ Carol Henderson Garcia; Carol E. Henderson (2002). Culture and Customs of India. Greenwood Publishing Group. **पृ.** 70–71. **आई.ऍस.बी.ऍन.** 978-0-313-30513-9. **अभिगमन तिथि**: 12 July 2012.
4. **ऊपर जायें**↑ David Lorenzen (Editors: Karine Schomer and W. H. McLeod, 1987), The Sants: Studies in a Devotional Tradition of India, Motilal Banarsidass Publishers, ISBN 978-81-208-0277-3, pages 281–302